भूलो सभी को मगर.....

भूलो सभी को तुम, मगर माँ–बाप को भूलो नहीं ।
उपकार अगणित हैं, कभी इस बात को भूलो नहीं ।।
पत्थर कई पूजे, तुम्हारे जन्म के खातिर अरे ।
पत्थर बन माँ बाप की, छाती कभी कुचलो नहीं ।।
सुख का निवाला दे अरे, जिनने तुम्हें मोटा किया ।
अमृत दिया तुमको, जहर उनके लिए उगलो नहीं ।।
कितने लड़ाए लाड, सब अरमान भी पूरे किए ।
पूरे करो अरमान उनके, गर्व में झूलो नहीं ।।
लाखों कमाते हो भले, माँ–बाप से ज्यादा नहीं ।
सेवा बिना सब राख है, मद में कभी फूलो नहीं ।।
संतान की सेवा मिले, संतान बन सेवा करो ।
जैसा करो वैसा भरो, इस सत्य को भूलो नहीं ।।
सो स्वयं गीले में, वो सुलाती थी तुम्हें सूखे में ।
माँ की बरसती भावना को, तुम कभी कुचलो नहीं ।।
जिसने बिछाए फूल थे, हरदम तुम्हारी राह में ।
उस रहबर के प्राण को, कंटक बन कुचलो नहीं ।।
धन तो मिलेगा फिर, मगर माँ–बाप क्या मिल पाएंगे ।
उनके चरण की धूल लेना, तुम कभी भूलो नहीं ।।

ऊंचे कुल के कारने, भूलि रहा संसार।
तब कुल की क्या लाज है, जब तन लेगा छार।।